2

Jhx.kiR;Fkoi'kh"kkifu"kr

हमारी संस्कृति में किसी भी कार्य को शुरूआत करने से पहले अदृश्य शक्तियों की पूजा करना सामान्य बात है। मार्ग में आने वाली बाधाओं को दूर करने के लिए भगवान गणेश को माना जाता है। इसलिए किसी भी कार्य की शुरूआत से पहले भगवान गणेश की पूजा की जाती है। वेदों में गणेश जी ब्रह्मनस्पति के रूप में जाने जाते हैं। गणपति की कल्पना हाथी के मुख जैसी मुद्रा वाले देवता के रूप में की गई है। गण का तात्पर्य है समूह, मानवीय गुण बुद्धि का समूह और कार्यसिद्धि आदि। इन सब गुणों को प्रदान करने वाली शक्ति का ही नाम है गणपति।

mÌs';

यह पाठ पढ़ने के बाद आप सक्षम होंगे:

- गणपत्यथर्वशीर्षोपनिषत् के मंत्रों का जाप कर पाने में, और
- गणेश वंदना का अर्थ समझ पाने में।

2.1 x.kiR;Fkol'kh"kksifu"kr

अथर्ववेद में अनेक मंत्र समूह (सूक्त) में गणेश जी के बारे में बताया गया है।

॥ श्रीगणपत्यथर्वशीर्षोपनिषत् ॥

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवाः । भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः । स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳ संस्तनूभिः । व्यशेम देवहितं यदायुः । ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः । स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः । स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः । स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

|| śrī gaṇapati atharvaśīrṣopaniṣat ||

om bhadraṁ karṇebhiḥ śṛṇuyāma devāḥ | bhadram paśyemākṣabhiryajatrāḥ | sthirairaṅgaistuṣṭuvā sastanūbhiḥ | vyaśema devahitaṁ yadāyuḥ | om svasti na indro vṛddhaśravāḥ | svasti naḥ pūṣā viśvavedāḥ | svasti nastārkṣyo ariṣṭanemiḥ | svasti no bṛhaspatirdadhātu ||

om śāntiḥ śāntiḥ śāntiḥ ||

d{kk & 4

fVIi.kh

हे भगवान, हम हमारें कर्णों से हमेशा अच्छा सुने, और हमारे नयनों से अच्छी चीजे देखें। हमारें शरीर और अंगों से हमेशा अपकी स्तुति करें।

ॐ नमस्ते ग॒णप॑तये । त्वमे॒व प्र॒त्यक्षं॒ तत्त्व॑मसि । त्वमे॒व के॒वलं॒ कर्ताऽसि । त्वमे॒व के॒वलं॒ धर्ताऽसि । त्वमे॒व के॒वलं॒ हर्ताऽसि । त्वमेव सर्वं खल्विदं ब्रह्मा॒सि । त्वं साक्षादात्मा॑ऽसि नि॒त्यम् ॥ १॥

oṁ namáste ga̱ṇapátaye | tvam e̱va pra̱tyakṣa̱ṁ tat-tvám-asi| tvam-e̱va ke̱vala̱ṁ kartā́'si | tvam-e̱va ke̱vala̱ṁ dhartā́'si | tvam-e̱va ke̱vala̱ṁ hartā́'si | tvam-eva sarvaṁ khalvidáṁ brahmā̱si | tvaṁ sākṣādātmā́'si ni̱tyam || 1 ||

देवता गणपति को प्रणाम। आप ही प्रत्यक्ष तत्व हो। आप ही केवल मात्र कर्ता हो। आप की केवल मात्र रक्षक हो। आप ही केवल मात्र विश्व विनाशक हो। आप ही केवल मात्र ब्रह्म हो। आप ही साक्षात् नित्यात्मा हो।

ऋ॒तं व॑च्मि । स॒त्यं व॑च्मि ॥ २॥

ṛ́taṁ va̱cmi | sátyaṁ va̱cmi || 2 ||

मैं सदा देव वाक्य बोलता हूँ। मैं सदा सत्य बोलता हूँ।

अव॑ त्वं माम् । अव॑ व॒क्तार॑म् । अव॑ श्रो॒तार॑म् । अव॑ दा॒तार॑म् । अव॑ धा॒तार॑म्। अवानूचानम॑व शिष्यम् । अव॑ प॒श्चात्ता॑त् । अव॑ पु॒रस्ता॑त्। अवोत्त॒रात्ता॑त् । अव॑ दक्षि॒णात्ता॑त्। अव॑ चो॒र्ध्वात्ता॑त् । अवाध॒रात्ता॑त्। सर्वतो मां पाहि पाहि॑ सम॒न्तात् ॥ ३॥

a̱va tva̱ṁ mām | avá va̱ktāraṁ | avá śro̱tāraṁ | avá dā̱tāraṁ | avá dhā̱tāraṁ | avānūcānam áva śi̱ṣyam | avá pa̱ścāttāt | avá pu̱rasttāt| avotta̱rāttāt | avá dakṣi̱ṇāttāt | avá co̱rdhvāttāt | avādha̱rāttāt | sarvato māṁ pāhi pāhi sama̱ntāt || 3 ||

हे श्री गणेश! तुम मेरे हो, बाधाओं से मेरी रक्षा करो। मेरी वाणी की रक्षा करों। मेरी बात सुनने वालों की रक्षा करो। मुझे देने वालों की रक्षा करो। मुझे धारण करने वालों की रक्षा करो। वेद उपनिषदों के वाचक और उससे ज्ञान लेने वाले शिष्यों की रक्षा करो। चारों दिशाओं पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण तथा ऊपर दिशा से लेकर नीचे की दिशा तक, सब तरफ से मेरी संपूर्ण रूप से रक्षा करों।

त्वं वाङ्मयस्त्वं॑ चिन्म॒यः । त्वमानन्दमयस्त्वं॑ ब्रह्म॒मयः । त्वं सच्चिदानन्दाद्वि॑तीयो॒ऽसि। त्वं प्र॒त्यक्षं॒ ब्रह्मा॑सि। त्वं ज्ञानमयो विज्ञान॑मयो॒ऽसि ॥ ४॥

tvaṁ vāṅgmayás-tvaṁ cin-ma̱yaḥ | tvam ānanda-máyas tvaṁ brahma̱-mayaḥ | tvaṁ sac-cid-ānandā 'dvitīyo̱'si | tvaṁ pra̱tyakṣa̱ṁ brahmāsi | tvaṁ jñāna-mayo vijñānámayo̱'si || 4 ||

तुम ही वाम हो और तुम ही चिन्मय हो। तुम ही आनन्द हो, तुम ही

ब्रह्ममय हो। तुम ही सच्चिदानंद अद्वितीय रूप हो। तुम ही प्रत्यक्ष परं ब्रह्म हो। तुम ही ज्ञान और विज्ञान के प्रदाता हो।

सर्वं जगदिदं त्वत्तो जायते । सर्वं जगदिदं त्वत्तस्तिष्ठति । सर्वं जगदिदं त्वयि लयमेष्यति । सर्वं जगदिदं त्वयि प्रत्येति । त्वं भूमिरापोऽनलोऽनिलो नभः । त्वं चत्वारि वाक्पदानि ॥ ५॥

sarvaṁ jagad-idam tvátto jāyate | sarvaṁ jagad-idaṁ tváttastiṣṭhati | sarvaṁ jagadidaṁ tvayi layám-eṣyati | sarvaṁ jagadidaṁ tvayi pratyeti | tvaṁ bhūmirāpo'nalo'nilo nabhaḥ | tvaṁ catvāri vāk-padāni || 5 ||

तुम ही इस जगत के जन्मदाता हो अर्थात् यह जगत् तुमसे ही हैं। यह सम्पूर्ण जगत तुम्हारी ही देन है (तुम्हारी वजह से ही है)। यह सम्पूर्ण जगत तुम में ही निहीत है। सम्पूर्ण जगत तुम में ही प्रतीत होता है। तुम ही भूमि, जल, अग्नि, वायु और आकाश हो। तुम ही चारो दिशाओं में व्याप्त हो।

त्वं गुणत्रयातीतः। त्वं अवस्थात्रयातीतः। त्वं देहत्रयातीतः। त्वं कालत्रयातीतः । त्वं मूलाधारस्थितोऽसि नित्यम् । त्वं शक्तित्रयात्मकः। त्वां योगिनो ध्यायन्ति नित्यम्। त्वं ब्रह्मा त्वं विष्णुस्त्वं रुद्रस्त्वमिन्द्रस्त्वमग्निस्त्वं वायुस्त्वं सूर्यस्त्वं चन्द्रमास्त्वं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम् ॥ ६॥

tvam guṉa-tra̍yātīṯtaḥ | tvaṁ avasthā-tra̍yātīṯtaḥ | tvaṁ deṯhatra̍yātīṯtaḥ | tvaṁ kāḻatra̍yātīṯtaḥ | tvaṁ mūlādhāra-sthito̍'si niṯtyam | tvaṁ śaktitra̍yātmaḵaḥ | tvāṁ yogino dhyāya̍nti niṯtyam| tvaṁ brahmā tvaṁ viṣṇustvaṁ rudrastvam indrastvam agnistvam vāyustvaṁ sūryas-tvaṁ candramāstvaṁ brahmaḵ bhūrbhuvaḵḥ svarom || 6 ||

तुम तीनों गुणों से परे (गुणातीत) हो। तुम तीनो अवस्थाओं से परे हो। तुम तीनो देहो से परे (देहातीत) हो। तुम तीनों कालो (भूत, भविष्य और वर्तमान) से पटे हो। तुम नित्य ही मूलाधार (जीवन के) में स्थित हो। तुम में ही तीनों शक्तियां व्याप्त हैं। तुम्हे ही योगी नित्य ध्यान करते है। तुम ही ब्रह्म, विष्णु, रूद्र, इन्द्र, अग्नि, वायु, सूर्य, चन्द्र हो और तुम में ही तीनों सगुण निर्गुण व्याप्त हैं।

गणादिं पूर्वमुच्चार्य वर्णादिंस्तदनन्तरम् । अनुस्वारः परतरः । अर्धेन्दुलसितम् । तारेण ऋद्धम् । एतत्तव मनुस्वरूपम् । गकारः पूर्वरूपम्। अकारो मध्यमरूपम्। अनुस्वारश्चान्त्यरूपम् । बिन्दुरुत्तररूपम्। नादः सन्धानम् । संहिता सन्धिः । सैषा गणेशविद्या। गणक ऋषिः । निचृद्गायत्री छन्दः । श्रीमहागणपतिर्देवता । ॐ गं गणपतये नमः ॥ ७॥

gaṇādiṁ "pūrvaṁ uccārya varṇādīṁs-tad anantaram | anusvāraḥ paratarah | ardhendu lasitam | tāreṇa ṛddham | etattava manusvarūpam | gakāraḥ pūrvarūpam | akāro madhyamarūpam| anusvāraścāntyarūpam | binduruttararūpam| nādas sandhānam | saguṁhitā sandhiḥ | saiṣā gaṇeśavidyā | gaṇaka ṛṣiḥ | nicṛdgāyatrīcchandaḥ | gaṇapatirdevatā | oṁ gaṁ gaṇapataye namaḥ|| 7 ||

गण का पूर्व में उच्चारण करें, उसके बार आदि वर्ण अकार का उच्चारण करें। उसके बाद अनुस्वार का। उसके बाद चन्द्रबिन्दु का। तारेण ऋद्धम् इसी तरह अनुस्वार। ग का पूर्वरूप, अ का मध्यरूप, अनुस्वार अन्तिम रूप, बिन्दु उत्तररूप, नाद संधानम्; संहिता सन्धि रूप। यह गणेश विद्या है। गणक ऋषि हैं। निचृद्गायत्री छन्द (मंत्र) है, महागणपति देवता हैं। ऊँ गं गणपति को प्रणाम।

एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो दन्तिः प्रचोदयात् ॥ ८॥

ekadantāya vidmahe vakratuṇḍāya dhīmahi | tan no dantiḥ pracodayāt || 8 ||

एकदंत, वक्रतुंड का हम ध्यान करते हैं। इस मार्ग पर चलने की गणपति हमें प्रेरणा दे।

एकदन्तं चतुर्हस्तं पाशमङ्कुशधारिणम् । रदं च वरदं हस्तैर्बिभ्राणं मूषकध्वजम् । रक्तं लम्बोदरं शूर्पकर्णकं रक्तवाससम् । रक्तगन्धानुलिप्ताङ्गं रक्तपुष्पैः सुपूजितम् । भक्तानुकम्पिनं देवं जगत्कारणमच्युतम् । आविर्भूतं च सृष्ट्यादौ प्रकृतेः पुरुषात्परम् । एवं ध्यायति यो नित्यं स योगी योगिनां वरः ॥ ९॥

ekadantaṁ caturhastaṁ pā śamaṅkuśa dhāriṇam | radaṁ ca varadaṁ hastairbibhrāṇaṁ mūṣakadhvajam |raktaṁ lambodaraṁ śūrpakarṇakaṁ rakta-vāsasam | rakta gandhānuliptā ṅgaṁ rakta puṣpaiḥ supūjitam | bhaktānukampinaṁ devaṁ jagat-kāraṇam-acyutam | āvir-bhūtaṁ casṛ ṣṭyādau prakṛteḥ puruṣāt-paraṁ | evaṁ dhyāyati yo nityaṁ sa yogī yogināṁ varaḥ|| 9 ||

भगवान गणेश एकदंत चार भुजा वाले है जिनमें वो पाश, अंकुश, दन्त, वर मुद्रा रखते है। उनके ध्वक पर मूषक (चूहा) है। लाल वस्त्रों को धारण करते हैं। चन्दन का लेप करते है। रक्तवर्ण सूमन (पुष्प) धारण करते हैं। सभी की मनोकामना पूर्ण करने वाले हैं और जगत् मे सर्वत्र व्याप्त हैं। सृष्टि के रचियता परं पुरूषात्मा हैं। जो योगी सात्विक हृदय (मन) से इनका ध्यान मनन करते हैं वो महायोगी हैं।

नमो व्रातपतये नमो गणपतये नमः प्रमथपतये नमस्तेऽस्तु लम्बोदराय एकदन्ताय विघ्नविनाशिने शिवसुताय श्रीवरदमूर्तये नमः ॥ १०॥

namo vrāta-pataye | namo gaṇapataye | namaḥ pramatha-pataye | namaste'stu lambodarāyaikadantāya vighna-nāśine śiva-sutāya varadamūrtaye namaḥ|| 10 ||

व्रातपति, गणपति को मेरा प्रणाम। प्रथम पति को प्रणाम। विघ्नविनाशक, लम्बोदर, शिवतनय श्री वरद् मूर्ति रूप को प्रणाम।

एतदथर्वशीर्षं॑ योऽधी॒ते । स ब्रह्मभूया॑य क॒ल्पते । स सर्वविघ्नै᳚र्न बा॒ध्यते । स सर्वतः सुख॑मेध॒ते । स पञ्चमहापापा᳚त् प्रमु॒च्यते । सा॒यम॑धीया॒नो॒ दि॒वस॑कृतं पा॒पं ना॑शयति । तर॑धीया॒नो॒ रात्रि॑कृतं पा॒पं ना॑शयति । सा॒यं प्रा॒तः प्र॑युञ्जा॒न॒ः पा॒पोऽपा॑पो भ॒वति । धर्मार्थकाममोक्षं॑ च वि॒न्दति। इदमथर्वशीर्षमशिष्याय॑ न दे॒यम्। यो यदि मोहा᳚द् दास्य॒ति। स पापी॑यान् भ॒वति। सहस्रावर्तनाद्यं यं काम॑मधी॒ते । तं तमने॑न सा॒धयेत् ॥ ११॥

etad-atharvaśīrṣáṁ yo'dhī̱te sa brahma bhūyā́ya ka̱lpate | sa sarva vighnā̈irna bā̱dhyate | sa sarvatra sukháṁ edha̱te | sa pañca-mahā-pāpā̈t pramu̱cyate | sā̱yam-ádhīyā̱no̱ divas-kṛtaṁ pāpá nāśa̱yati | prā̱tar-ádhīyā̱no̱ rātri-kṛtaṁ pāpá nāśa̱yati | sāyaṁ prātaḥ práyuñjā̱no̱ pāpo'pā́po bha̱vati | savatrādhīyāno'pavíghno bha̱vati | dharm-ārtha kāma mokṣáṁ ca vi̱ndati | idam atharva-śīrṣam aśiṣyāyá na deyam | yo yadi móhād dā̱syati sa pāpī́yān bha̱vati | sahasrāvartanādyaṁ yaṁ kāmáṁ-adhī̱te yā tam anéna sā̱dhayet || 11 ||

जो इस अथर्वशीर्ष का पाठ करता है वह विघ्नों (बाधाऔं) से दूर रहता है। वह सदैव के लिए सुखी हो जाता है। पंच महा पापों से दूर हो जाता है। जो संध्या समय में पाठ करते हैं, उनके दिन के दोष दूर हो जाते हैं। प्रातः पाठ करने से रात्रि के दोष दूर हो जाते हैं। सर्वदा पाठ करने वाला हमेशा के लिए दोष मुक्त हो जाता है। वह धर्म अर्थ, काम और मोक्ष सब पर विजय को प्राप्त करता है। जो इसका एक सहस्र बार पाठ करता है वह उपासक सिद्धि प्राप्त योगी बनता है।

अनेन गणपतिमभिंषिञ्चति । स वाँग्मी भवति । चतुर्थ्यामनंश्नन् जपति । स विद्यांवान् भवति । इत्यथर्वणवाक्यम् । ब्रह्माद्याचरंणं विद्यान्न बिभेति कदांचनेति ॥ १२॥

anena gaṇapatim ábhiṣiñcati sa vā́gmī bhavati | caturthyām-anáśnan japati savidyā́vān bhavati | ity-atharváṇa vākyaṁ | brahmādyāvaráṇaṁ vidyān nabibheti kadā́caneti|| 12 ||

जो इस मंत्र के साथ गणेश जी का अभिषेक करता है उसकी वाणी पर उसका अधिकार हो जाता है। जो चतुर्थी को भगवान गणेश की उपासना करता है वह विद्यावान (विद्वान) बनता है। जो इस ब्रह्मादि आचरण को मानता है वह हमेशा के लिए भयमुक्त हो जाता है।

यो दूर्वाङ्कुंरैर्यजति । स वैश्रवणोपंमो भवति । यो लांजैर्यजति । स यशोंवान् भवति। स मेधांवान् भवति । यो मोदकसहस्रेंण यजति । स वाञ्छितफलमंवाप्नोति। यः साज्य समिंद्भिर्यजति । स सर्वं लभते स संर्वं लभते ॥ १३॥

yo dūrvāṅkurair-yajati sa vaiśravaṇopamo bhavati | yo lājair-yajati sa yaśāvān bhavati | sa medhāvān bhavati | yo modaka sahasreṇa yajati sa vāñcita phalaṁ avāpnoti | yaḥ sājya samidbhir-yajati sa sarvaṁ labhate sa sarvaṁ labhate || 13 ||

जो दुर्वकरो द्वारा पूजन करता है वह कुबेर के समान बन जाता है। जो मंत्र के द्वारा पूजन करता है वह यशोवान बनता है मेधावान बनता है। जो मोदक (लडडू) के साथ पूजन करता है वह इच्छित फल की प्राप्ति करता है। जो धृतात्व समिधा के द्वारा हवन करता है वह सब कुछ प्राप्त करता है। वह सर्व प्राप्त करता है।

अष्टौ ब्राह्मणान् सम्यग् ग्राहयित्वा । सूर्यवर्चस्वी भवति । सूर्यग्रहे महानद्यां प्रतिमासन्निधौ वा जप्त्वा। सिद्धमंन्त्रो भवति । महाविघ्नात् प्रमुच्यते । महादोषात् प्रमुच्यते । महापापात् प्रमुच्यते। महाप्रत्यवायात् प्रमुच्यते । स सर्वविद्भवति स सर्वविद्भवति । य एवं वेद। इत्युपनिषत् ॥ १४॥

aṣṭau brāhmaṇān samyag grāhayitvā sūrya varcasvī bhavati | sūrya-grahe mahā nadyāṁ pratimā sannidhau vā japtvā siddha mantro bhavati | mahā vighnāt pramucyate | mahā doṣāt pramucyate | mahā pratyavāyāt pramucyate | sa sarva vid-bhavati | sa sarva vid-bhavati | ya evaṁ veda | ityupaniṣat|| 14||

जो आठ ब्राह्ममणों (विद्वानों) को सम्यग (उपनिषद्) का ज्ञाता बनाता है वह सूर्य के समान तेजवान बनता है। सूर्यग्रहण के समय महान नदियों के तट पर अपने इष्ट गणेश के समीप इस उपनिषद् का पाठ करता है वह सिद्धि

को प्राप्त करता है और विघ्नों से दूर हो जाता है। महा दोषों से दूर हो जाता है। महा पापों से दूर हो जाता है। महा प्रत्यवायों से दूर हो जाता है। वह सबकुछ का ज्ञाता (विद्वान) हो जाता है। वह विद्वान हो जाता है। यह ऐसी ही ब्रह्म विद्या है, अर्थात यह ही उपनिषद् है।

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवाः । भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः । स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिः । व्यशेम देवहितं यदायुः । ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः । स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः । स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः । स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

om bhadraṁ karṇébhiḥ śṛṇuyāmá devāḥ | bhadraṁ páśyemākṣabhiryajátrāḥ | sthirairaṅgaístuṣṭuvā sástanūbhiḥ | vyaśéma devahítaṁ yadāyúḥ | om svasti na indró vṛddhaśrávāḥ | svasti náḥ pūṣā viśvavédāḥ | svasti nastārkṣyo ariṣṭanemiḥ | svasti no bṛhaspatirdadhātu ||

om śāntiḥ śāntiḥ śāntiḥ ||

हे! गणेश हमें ऐसे शब्द सुनाई दें जिनसे हमारा ज्ञान बढे। और हमें निंदा और दुराचार से दूर रखें। हम सदैव लोककल्याण में लगे रहें तथा आपकी भक्ति में लीन रहें। हमारे स्वरूप पर हमेशा आप कृपा करें । हम विलासिता से सर्वदा दूर रहें। हमारे तन मन में हमेशा आपका वास हो। हमें हमेशा सुकार्यों का भागी बनायें। चारों दिशा में जिसकी कीर्ति व्याप्त है। वह इन्द्र देवता जो की देवादिदेव हैं, उनके जैसी जिनकी प्रसिद्धि है, जो बुद्धि का सागर हैं, जिनमें

बृहस्पति के समान शक्तियां है, जिनके मार्गदर्शन से कार्य को दिशा मिलती है, जिससे समस्त प्रणिजगत का कल्याण होता है उन श्री गणपति को मेरा प्रणाम।

ऊँ शांति! शांति! शांति!

ikBxr iz'u& 2-1

A. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. त्वमे॒व .... तत्त्वंमसि
2. सर्वं .... त्वंत्तो जा॒यते ।
3. त्वां .... ध्यायंन्ति नि॒त्यम् ।
4. त्वं भूमिरापोऽनलोऽनिंलो .... ।

B. निम्न प्रश्नों का उत्तर लिखिए –

1. कः चत्वारि वांक्पदा॒नि ?
2. गणपतिः कस्मात् अतीतः वर्तते?

vkius D;k lh[kk\

- गणपति की चरित्रिक विशेषताएं और शक्तियां।
- गणपत्यथर्वशीर्षोपनिषत् के मंत्रो का उच्चारण।

Reference:

- Atharva Veda
- Sukta Sangraha; Pandit Sri Rama Ramanuja Acari, 2017

ikBkr iz'u

1. अपने शब्दों में श्री गणपति देवता की स्वाभाविक प्रकृतियां और शक्तियों का वर्णन कीजिए।

mÙkjekyk

2.1

A.

1. प्रत्यक्षं
2. जगदिदं
3. योगिनो
4. नभः

B.

1. गणपतिः
2. सः गुणत्रंयातीतः, अवस्थात्रंयातीतः, देहत्रंयातीतः, कालत्रंयातीतश्च ।